हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन—सुलभ-साहित्य-माला—६

शिवा-बावनी

सटीक



प्रकाशक
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
प्रयाग



दूसरीवार २००० } संवत् १९८० { मूल्य ≡)

कृतज्ञता-प्रकाश



श्रीमान् बड़ौदा नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ महोदय ने बम्बई के सम्मेलन में स्वयं उपस्थित होकर जो पांच सहस्र रुपये की सहायता सम्मेलन को प्रदान की थी उसी सहायता से सम्मेलन इस "सुलभ-साहित्य-माला" के प्रकाशन का कार्य कर रहा है। इस "माला" में जिन सुन्दर और मनोरम ग्रन्थ-पुष्पों का ग्रन्थन किया जा रहा है उनकी सुरभि से समस्त हिन्दी-संसार सुवासित हो रहा है। इस "माला" के द्वारा जो हिन्दी-साहित्य की श्रीवृद्धि हो रही है उसका मुख्य श्रेय श्रीमान् बड़ौदा-नरेश महोदय को है। श्रीमान् का यह हिन्दी-प्रेम भारत के अन्य हिन्दी-प्रेमी श्रीमानों के लिए अनुकरणीय है।

निवेदक—

मन्त्री,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन,

प्रयाग।

कविवर भूषण का परिचय



षण का जन्म-संवत् १६९२ तथा मृत्यु-संवत् १७७२ माना जाता है। इन की जन्म-भूमि तिकवांपुर (त्रिविक्रमपुर) कानपुर ज़िले में मानी जाती है। इन के पिता का नाम पंडित रत्नाकर तिवारी था। इनके ज्येष्ठ भ्राता चिन्तामणि तथा छोटे भ्राता मतिराम और नीलकंठ थे। ये चारो ही बड़े प्रतिभाशाली कवि हुए हैं। पहिले कुछ काल तक भूषण चित्रकूटाधिपति रुद्रराम सोलंकी के दरबार में रहे और वहीं उनको भूषण की उपाधि मिली। भूषण ने शिवराजभूषण में स्वयं लिखा है—

कुल सुलंकि चित्रकूट पति, साहस सील समुद्र।
कवि भूषण पदवी दई, हृदय राम सुत रुद्र॥

इनका वास्तविक नाम मालूम नहीं क्या था।

संवत् १७२४ के लगभग भूषण शिवा जी के निकट गये और वहां इनका अत्यन्त मान हुआ। इन्हों ने शिवाजी के लिए शिवराजभूषण तथा शिवा-बावनी की रचना की। शिवराजभूषण से शिवा-बावनी के छन्द अधिक प्रभावोत्पा-

दक हैं। इसके बाद महेवा नरेश छत्रसाल बुंदेला, कमायूँ-नरेश और बूँदी नरेश के राज्य दरबारों में भी इनका अच्छा मान हुआ।

संवत् १७३७ में शिवाजी के स्वर्गवास होने पर भूषण अपने देश को चले आये और वहीं रहने लगे। इनके वंशज मध्य-प्रदेश में अब भी पाये जाते हैं। 'वृन्द सतसई' के रचयिता कवि वृन्द इन्हीं के वंश में हुए हैं। कहते हैं कि सीतल कवि भी इन्हीं के वंशज हैं।

भूषण वीर रस के पूर्ण प्रतिपादक महा कवि थे। यह चापलूस नहीं थे, किन्तु बड़े ही सत्य वक्ता और निर्भय कवि थे। और सदा ही वीर रस का पक्ष लेते थे। इनकी कविता से बहुत कुछ ऐतिहासिक ज्ञान अवगत होता है। इन्होंने देश-दशा, समाजिक व्यवस्था तथा जातीय-गौरव का बड़ा ही भाव पूर्ण और हृदय-ग्राही वर्णन किया है।





शिवा बावनी।



कवित्त-मनहरण।

साजि चतुरंग बीर रंग में तुरंग चढ़ि,
सरजा सिवा जी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद मद गैबरन के रलत है॥
ऐल फैल खैल भैल खलक में गैल गैल,
गजन की ठैल पैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥ १॥

भावार्थ

भूषण शिवाजी की युद्ध-यात्रा का वर्णन करते हैं—शिवाजी बड़े ही उत्साह से अपनी चतुरंगिणी (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल युक्त) सेना तैयार करके घोड़े पर सवार हो युद्ध में विजय प्राप्त करने जा रहे हैं। बेहद नगाड़ों का शब्द हो रहा है। मतवाले हाथियों के मस्तक से मद बह कर नदी नद में मिल रहा है, अर्थात् मद की नदी बह रही है। फ़ौज के कोलाहल से संसार में गली गली हलचल मच

रही है। फ़ौज की धूम के मारे इतनी धूल आकाश में छा रही है कि सूर्य धूल से ढक जाने के कारण एक छोटे तारे के समान मालूम होता है, और जिस प्रकार थाली में पारा हिलता है, उसी प्रकार शिवाजी की सेना के भार से समुद्र हिल रहा है।

टिप्पणी

यह उपमा अलंकार है। जब दो वस्तुओं में भिन्नता होते हुए रूप, रंग अथवा गुण में से किसी एक के साथ समानता दिखाई जाती है, तब उपमा अलंकार होता है। जिसकी समानता की जाती है, वह 'उपमेय' है, जिससे उपमा दी जाती है, वह 'उपमान' है, जिस अर्थ में समानता देते हैं, वह धर्म है, और जिस शब्द की सहायता से समानता बतलाई जाती है, वह 'वाचक' है, यहां पर 'तरनि' उपमेय 'तारा' उपमान 'सो' वाचक और 'छोटा' जो गुण है, धर्म है।

यह छन्द मनहरण है। इसका प्रत्येक चरण ३१ अक्षर का होता है। १६ और १५ अक्षरों पर विराम होता है और अन्त का अक्षर दीर्घ रहता है।

सरजा—मालोजी की उपाधि सरजाह थी। "सरजा" सरजाह का अपभ्रंश है; सरजा का अर्थ सिंह भी है। कोलाहल=कोलाहल। फैलत=फैलने से। खैल भैल=खलभल, अनुप्रास के लिये ऐसा रूप कर दिया गया है।



बाने फहराने घहराने घंटा गजन के,
नाहीं ठहराने राव राने देस देस के।
नग भहराने ग्राम नगर पराने सुनि,
बाजत निसाने सिवराज जू नरेस के॥

हाथिन के हौदा उकसाने, कुंभ कुंजर के,
भौन को भजाने अलि, छूटे लट केस के।
दल के दरारन ते कमठ करारे फूटे,
केरा के से पात बिहराने फन सेस के ॥ २ ॥

भावार्थ

रण-पताकाओं के उड़ने और हाथियों के घंटे बजने से मारे डर के देश देश के छोटे बड़े राजे महाराजे शिवा जी की प्रचंड फ़ौज के सामने न ठहर सके। महाराज शिवा जी के डंके की आवाज़ से पहाड़ भरभरा कर गिर पड़े। गाँव और शहरों के लोग अपना अपना घर छोड़ कर भाग गये। हाथियों के हौदे ढीले पड़ गये। हाथियों के मस्तक के मद पर उड़ते हुये भौंरे अपने अपने घर भाग गये। शत्रुओं की स्त्रियों के बाल छूट पड़े। फ़ौज की धमक से महा कठोर कच्छप के टुकड़े टुकड़े हो गये और शेष नाग के सहस्र फन केले के पत्तों की तरह फट गये।

टिप्पणी

यहां पूर्णोपमा अलंकार है।

कच्छप=पुराणोक्त एक कछुआ, जिस पर पृथ्वी को धारण करने वाले शेष नाग रहते हैं। सेस=शेष; एक हज़ार फन वाला सर्प, जो पृथ्वी को धारण किये रहता है।

प्रेतिनी पिसाचरु निसाचर निसाचरिहू,
मिलि मिलि आपुसमें गावत बधाई है।

भैरों भूत प्रेत भूरि भूधर भयंकर से,
जुत्थ जुत्थ जोगिनी जमाति जुरि आई है ॥
किलकि किलकि कै कुतूहल करति काली,
डिम डिम डमरू दिगंबर बजाई है ।
सिवा पूछैं सिव सों 'समाजु आजु कहां चली',
काहू पै सिवा नरेस भ्रकुटी चढ़ाई है ॥ ३ ॥

भावार्थ

रणभूमि में मरे हुए वीर पुरुषों का रुधिर और मांस मिलने की आशा से भूत, चुड़ेलें, राक्षस और राक्षसियाँ मिल कर आनन्द से गा रहे हैं। पहाड़ों के समान डरावने भैरव, बहुत से भूत, प्रेत और योगिनी मंडली बाँध बाँध कर एकत्रित हो रही हैं। प्रसन्नता के मारे काली आनन्द से नाच रही है, और शिव जी डमरू बजा रहे हैं। यह सब आनन्दोत्सव देख कर पार्वती जी विस्मित हो शिव जी से पूँछती हैं, कि आज आपकी मंडली कहाँ चली? शिव जी उत्तर दे रहे हैं कि शिवा जी किसी शत्रु पर क्रोधित हुए हैं।

टिप्पणी

यहां अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार है। जो बात असल में कहनी हो, उसे स्पष्ट रूप में न कह कर ऐसे शब्दों में कहना चाहिये जो यथार्थ प्रकट हो जाय। जैसे शिवजी के कहने का यह आशय था कि रणभूमि में हमारे भूत-प्रेत गण मांस-भक्षण करेंगे। किन्तु, ऐसा न कह कर इतनाही संकेत किया कि शिवा जी किसी पर क्रोधित हुए हैं।

रु=मरु, और। जुत्थ=यूथ, झुंड। डिमडिम=डमरू के बजने का शब्द। डमरू=एक छोटासा बाजा, जिस के दोनों सिरों पर चमड़ा मढ़ा

रहता है। उसमें एक तांत का टुकड़ा लगाया जाता है, जिसमें छोटी छोटी घुंडिया लगी रहती हैं। हाथ के हिलाने से ये घुंडियां चमड़े में लग कर बजती हैं।



बद्दल न होहिं दल दच्छिन घमंड माहिं,
घटा जु न होहिं दल सिवा जी हंकारी के।
दामिनी दमंक नाहिं खुले खग्ग बीरन के,
बीर सिर छाप लखु तीजा असवारी के॥
देखि देखि मुगलों की हरमैं भवन त्यागैं,
उझकि उझकि उठैं बहत बयारी के।
दिल्ली मति भूली कहै बात घन घोर घोर,
बाजत नगारे ये सितारे गढ़ धारी के॥ ४॥

भावार्थ

महाराज शिवाजी के आतंक से मुग़ल स्त्रियों और दिल्ली-निवासियों का हृदय सदा भय-भीत रहता है। यहाँ तक कि वर्षा ऋतु के बादल और बिजली में उन्हें शिवाजी की सेना का ही आभास होता है।

उठते हुये बादलों को देख कर वे कहते हैं कि यह घमंड में भरी दक्षिणी सेना है; घटा को देख कर वे कहते हैं कि यह अहंकारी शिवाजी का दल है; बिजली की चमक को देख कर वे कहते हैं कि ये वीरों के नंगे खड्ग और तीजा की सवारी में निकले हुए वीरों के चमकीले सिरपेंच हैं। इनको देख कर मुग़लों की स्त्रियाँ अपने अपने घर छोड़ कर भाग जाती हैं

और हवा के शब्द से चौंक चौंक उठती हैं। बादलों की गरज को सुन कर बुद्धि-भ्रष्ट दिल्ली-निवासी यह बात कहते हैं कि यह सितारा के क़िले के स्वामी अर्थात् शिवा जी के नगाड़े बज रहे हैं।

टिप्पणी

यहां शुद्धापन्हुति अलङ्कार है। जहां उपमेय की सत्यता छिपाकर वह उपमान प्रकट किया जाता है, वहां शुद्धापन्हुति अलङ्कार होता है। यहां कवि ने उपमेय शब्द 'बादल' को असत्य बतला कर उपमान शब्द 'दल' को स्थापित किया है।

इस छन्द के प्रथम दो चरण बहुत ही शिथिल हैं। प्रथम चरण के दोनों विभागों के अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं जान पड़ता। दूसरे चरण में शिवाजी के दल के सम्बन्ध में तीजा का स्मरण अप्रासंगिक है।

हंकारी=अहङ्कारी, यहां 'अ' छिपा हुआ है। खग्ग=खड्ग। बयारी=हवा। सितारे गढ़=सितारा का क़िला, सितारा एक नगर का नाम है, जहां शिवा जी की राजधानी थी। तीजा=हरितालिका तीज।



बाजि गजराज सिवराज सैन साजतही,
दिल्ली दिलगीर दसा दीरघ दुखन की।
तनियाँ न तिलक सुथनियाँ पगनियाँ न,
घामें घुमरातीं छोड़ि सेजियाँ सुखन को॥
भूषन भनत पति बाहँ बहियाँ न तेऊ,
छहियाँ छबीली ताकि रहियाँ रुखन की।
बालियाँ बिथुर जिमि आलियाँ नलिन पर,
लालियाँ मलिन मुगलानियाँ मुखन की॥५॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि जब बीरवर शिवाजी ने अपने घोड़े और हाथी सजा कर दिल्ली पर चढ़ाई करने को फ़ौज तैयार की, उस समय दिल्ली वाले भय के मारे अत्यन्त दुखी हुये। घबड़ाहट के मारे मुग़लों की स्त्रियाँ बिना चोली (कंचुकी) कुर्ते, पायजामें और जूतियाँ पहिने सुख-शैया छोड़ कर कड़ी धूप में भागने लगीं। सुन्दर युवतियाँ, जिन्हें पति की बाहों में आने का अवसर नहीं हुआ था अर्थात् जो नव-विवाहिता थीं, पेड़ों की छाया ढूँढ़ने लगीं। उनके मुखों पर बालों की लटें ऐसी छूट रही थीं, मानों कमल पर भौंरियाँ मडरा रही हों और भय के कारण उन के मुख की छटा मलिन हो रही थी।

टिप्पणी

यहां उपमा अलङ्कार है।

दिलगीर=(फ़ारसी) दुखी । तिलक=तुरकी शब्द तिरलीक का अपभ्रंश, एक प्रकार का ढीला और लम्बा कुर्ता। पगनियाँ=जूतियाँ। आलियाँ=भ्रमरियाँ। लालियाँ=सुन्दरता।



कत्ता की कराकन चकत्ता को कटक काटि,
कीन्ही सिवराज बीर अकह कहानियाँ।
भूषन भनत तिहुं लोक में तिहारी धाक,
दिल्ली औ बिलाइति सकल बिललानियाँ॥
आगरे अगारन ह्वै फाँदतीं कगारन छ्वै,
बाँधतीं न बारन मुखन कुम्हलानियाँ।

कोबी कहैं कहा औ गरीबी गहैं भागी जायँ,
बीबी गहे सूथनी सु नीबी गहे रानियाँ ॥ ६ ॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि हे वीरवर शिवा जी आपने अपने कत्ता (शस्त्र-विशेष) की चोटों से औरंगज़ेब की सेना के टुकड़े टुकड़े करते हुए ऐसी वीरता के काम किये हैं, जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। तीनों लोकों में आपका आतंक छा गया है। दिल्ली तथा अन्यान्य मुसलमानी राज्य आप के प्रताप से दहल गये हैं। आपके डर से बेगमें और रानियाँ आगरे के महल की मुँडेरों से कूद कूद भागी जा रही हैं। उनके मुख कुम्हला गये हैं और बालों को वे मारे जल्दी के बाँध भी नहीं सकती हैं। दीनता से बेगमें पायजामा और रानियाँ नीबी, पकड़े भागती हुई कहती जा रही हैं 'अब हम क्या करेंगी !

टिप्पणी

यहां अनुप्रास अलङ्कार है। व्यंजनों की समानता होने से, चाहे स्वर एक से हो वा न हों अनुप्रास अलङ्कार होता है। इस के ५ भेद हैं, (१) वृत्ति (२) श्रुति (३) छेक (४) अन्त्य और (५) लाट।

कत्ता=बांका, एक प्रकार का शस्त्र। कराकन=चोटों से। कीबी=करेंगी। सूथनी=पायजामा। कहा=क्या। नीबी=फुफुंदी, धोती का वह भाग जिसे चुन कर स्त्रियाँ नाभि के नीचे खोंस अथवा बांध लेती हैं।



ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहन वारी,
ऊंचे घोर मंदर के अंदर रहाती हैं।

कंद मूल भोग करैं कंद मूल भोग करैं,
तीन बेर खातीं ते वै बीन बेर खाती हैं ॥
भूषन सिथिल अंग भूखन सिथिल अंग,
विजन डुलातीं ते वै विजन डुलाती हैं।
भूषन भनत सिवराज बीर तेरे त्रास,
नगन जड़ातीं ते वै नगन जड़ातीं हैं ॥ ७ ॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि हे बीरवर शिवा जी, आपके भय के मारे जो मुग़ल घराने की स्त्रियाँ बड़े बड़े मकानों के भीतर परदे में रहती थीं, वे अब भयानक पहाड़ों में छिपी रहती हैं। जो बढ़िया मिठाई खाकर रहती थीं, वे अब कन्द और मूल अर्थात् पौधों की जड़ें खाकर दिन काट रही हैं। तीन तीन बार भोजन करने वाली बेर बीन बीन कर गुज़ारा कर रही हैं। सुकुमारता के कारण जिनके शरीर गहनों के भार से सिथिल पड़ जाते थे, अब वे भूख के मारे दुर्बल हो गयी हैं। जो पंखे झलती रहती थीं, वे अब निर्जन जंगल में मारी मारी फिरती हैं और जो रत्नजटित गहने पहनती थीं वे बिना वस्त्र के जाड़े में काँप रही हैं।

टिप्पणी

यहां यमक अलङ्कार है। जहां एक ही शब्द बार बार आता है, किन्तु उसका अर्थ जुदा जुदा होता जाता है, वहां यमक अलङ्कार कहा जाता है। जैसे पहले 'मंदर' से मकान का बोध होता है और दूसरे 'मंदर' से पहाड़ का। यहां पर मंदर, कन्द मूल, बेर, भूषन, विजन और नगन ये शब्द दो दो अर्थों में प्रयुक्त हुए हैं।

कन्दमूल=कन्द मूल एक प्रकार की बिना रेशे की जड़ होती है। कन्द सब जड़ों को कहते हैं। कन्दमूल शब्द का एक साथ ही प्रयोग होता है। भूषन=भूषण, गहना। भूखन=भूख से।



उतरि पलंग ते न दियो है धरा पै पग,
तेऊ सगबग निसि दिन चली जाती हैं।
अति अकुलातीं मुरझातीं न छिपातीं गात,
बात न सोहातीं बोलै अति अनखाती हैं॥
भूषन भनत सिंह साहि के सपूत सिवा,
तेरी धाक सुने अरि नारी बिललाती हैं।
कोऊ करैं घाती कोऊ रोतीं पीटि छाती, घरैं
तीन बेर खातीं ते वै बीन बेर खाती हैं॥ ८॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि हे सिंह के समान बीर साह जी के सुपुत्र शिवा जी, आपका प्रताप सुनकर शत्रुओं की स्त्रियां व्याकुल हो रही हैं। जिन सुकुमार स्त्रियों ने कभी पलंग पर से उतर धरती पर पैर भी नहीं रक्खा था, अब वे भी डरके मारे रात दिन भागती चली जा रही हैं। व्याकुलता से उनका मुख सूख गया है। वे घबड़ाती हुई शरीर पर कपड़ा डालने का भी ध्यान नहीं करती हैं। उन्हें किसी की बात अच्छी नहीं लगती और कुछ बोलने पर झुँझला उठती हैं। कोई कोई तो आत्मघात करती हैं। और कोई छाती पीट

पीट कर जोर से रोती हैं। जो घर में तीन तीन बार भोजन करतीं थीं आज वे ही जंगल में बेर बीन बीन कर खा रही हैं।

टिप्पणी

इस छन्द में यमक, अनुप्रास और उपमा अलंकार हैं।

यह छन्द कविता का कुछ अच्छा उदाहरण नहीं कहा जा सकता। यद्यपि अनुप्रास और यमक में यह छन्द श्रुति मधुर है, तथापि इसमें भाव की शिथिलता हैं, विशेष कर चौथे चरण में घात की चर्चा करने के बाद बेर खानेकी चर्चा उठाना बिलकुल असंगत है, और ऐसा जान पड़ता हैं, कि यहां छन्द पूर्त्ति की आवश्यकता ने अर्थ-गौरव पर विजय पाई है। इसी प्रकार की काव्य-दुर्बलता आगे के कई छन्दों में दिखाई पड़ती है।



अन्दर ते निकसी न मन्दर को देख्यो द्वार,
बिन रथ पथ ते उघारे पांव जाती हैं।
हवाहू न लागती ते हवा ते बिहाल भईं,
लाखन की भीर में संभारती न छाती हैं॥
भूषन भनत सिवराज तेरी धाक सुनि,
हयादारी चीर फारि मन झुंझलाती हैं।
ऐसी परीं नरम हरम बादसाहन की,
नासपाती खातीं ते बनासपाती खाती हैं॥ ६॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी आपका आतंक सुनकर बादशाह की बेगमें, जिन्होंने कभी भीतर से निकल

कर अपने महलों का दरवाज़ा भी नहीं देखा था, आज बिना सवारी के नंगे पैर रास्ते में जाती हैं। जिनके महल के भीतर हवा भी नहीं आ सकती थी, अब वही हवा के लगने से व्याकुल हो रही हैं। घबड़ाहट से उनके स्तनों पर से वस्त्र तक खिसक गया है, पर वे उसे बिना सँभाले ही लाखों आदमियों की भीड़ में हो चली आती हैं। आपके भयसे लज्जा के वस्त्र को फाड़ कर अर्थात् लज्जा त्याग कर, वे मनही मन क्रोध कर रहा हैं। बादशाह की बेगमें ऐसी दीन हो गई हैं कि जो नासपातियां और मेवे खाती थीं, आज सागभाजी खाकर ही दिन काट रही हैं।

टिप्पणी

यहां अनुप्रास और यमक अलंकार है।

हयादारा=लज्जा। नरम=नम्र, दीन। हरम=बेगमें। नासपाती—यहां पर नासपाती के प्रयोग से मेवे और बढ़िया फलों से अभिप्राय है। बनासपाती—बनस्पति का अपभ्रंस है। यहां अभिप्राय ग़रीबोंके खाने योग्य सागपात से है।



अतर गुलाब रस चोवा घनसार सब,
सहज सुवास की सुरति बिसराती हैं।
पल भर पलंग ते भूमि न धरति पाँव,
भूली खान पान फिरैं बन बिललाती हैं॥
भूषन भनत सिवराज तेरी धाक सुनि,
दारा हार बार न सम्हारैं अकुलाती हैं।

ऐसी परी नरम हरम बादसाहन की,
नासपाती खाती ते बनासपाती खाती हैं ॥१०॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी, आप का नाम सुन कर बादशाही घराने की बेगमें भय के कारण गुलाब का इत्र, चोवे का रस और कपूर यह सब साधारण सुगंध की सामग्रियाँ भूल गई हैं। जो सुकुमारता के कारण पलंग से उतर कर ज़मीन पर पल भर भी पैर नहीं रखती थीं; वे भूखी प्यासी वन वन मारी मारी फिर रही हैं। घबड़ा-हट में न वे अपने हार और न केश सम्हालती हैं। बादशाही के जनाने की ये स्त्रियाँ ऐसी दीन हो गई हैं कि वे नासपाती और मेवे के स्थान में सागपात खा रही हैं।

टिप्पणी

यहां यमक अलंकार है।

चोवा=एक प्रकार का सुगंधित द्रव पदार्थ जो केसर कस्तूरी आदि से बनाया जाता है। दारा=स्त्रियां। बार=बाल, केश।



सोंधे को अधार किसमिस जिनको अहार,
चार को सो अंक लंक चन्द सरमाती है।
ऐसी अरिनारी सिवराज बीर तेरे त्रास,
पायन में छाले परे कन्द मूल खाती हैं॥
ग्रीषम तपनि ऐसी तपति न सुनी कान,
कंज कैसी कली बिनु पानी मुरझाती हैं।

तोरि तोरि आछे से पिछौरा सों निचोर मुख,
कहैं अब कहाँ पानी मुकतों में पाती हैं ॥११॥

भावार्थ

जिनका जीवन सुगन्ध पर ही निर्भर था, जिन का भोजन किसमिस आदि मेवे थे और चार के अंक के मध्य-भाग के समान, जिन की अत्यन्त पतली कमर थी, और जो सौन्दर्य में चन्द्रमा को भी लजाती थीं, ऐसी शत्रुओं की स्त्रियाँ हे बीरवर शिवा जी, आप के भय के मारे भागती चली जा रही हैं। चलते चलते उनके पैरों में छाले पड़ गये हैं और वे कन्द मूल खा कर ही दिन काट रही हैं। ऐसी तेज़ गरमी में, जैसी कभी सुनी भी नहीं गई, वे कोमल स्त्रियाँ प्यास के मारे कमल की कलियों की तरह कुम्हला रही हैं। बढ़िया चादर से मोतियाँ तोड़ कर मुहँ में निचोड़ती हुई कहती हैं कि इनमें पानी भी नहीं है!

टिप्पणी

कहां पानी मुकते में—अच्छे मोतियों का आब अथवा पानी प्रसिद्ध है। वास्तव में यह पानी व आब मोती के सौन्दर्य और चमक को कहते हैं। यहां तात्पर्य यह है, कि स्त्रियाँ इतनी प्यासी थीं कि भ्रम में पड़ कर वे मोतियों में वास्तविक जल ढूंढ़ने लगीं और उनमें जल न पाकर कहने लगीं कि मोतियों में जो आब या पानी का होना प्रसिद्ध है, वह इन में कहां है?



साहि सिरताज औ सिपाहिन में पातसाह,
अचल सु सिन्धु के से जिनके सुभाव हैं।

भूषन भनत परी शक्र रन सेवा,
धाक काँपत रहत न गहत चित चाव हैं ॥
अथह विमल जल कालिन्दी के तट केते,
परे युद्ध विपति के मारे उमराव हैं ।
नाव भरि बेगम उतारैं बाँदी डौंगा भरि,
मक्का मिस साह उतरत दरियाव हैं ॥१२॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि राजाओं में श्रेष्ठ तथा सूरशिरोमणि बादशाह भी, जिनकी गंभीरता अगाध समुद्र की नाईं है, शिवाजी का आतंक सुन कर निरुत्साह हो डर के मारे काँपते रहते हैं। कई सरदार आफ़त के मारे अथाह और निर्मल यमुनाजी के किनारे छिपे हुए पड़े हैं। बादशाह अपनी बेगमों को किस्तियों में और दासियों को डोंगियों में भर भर कर तीर्थस्थान मक्का जाने का बहाना कर के समुद्र पार करते हैं।

टिप्पणी

यहां पर्यायोक्ति अलंकार है। जो बात कहनी हो, उसे सीधी रीति से न कह कर कुछ घुमा फिरा कर कहने को पर्यायोक्ति कहते हैं, जैसे यहां भागते तो डर के मारे हैं, पर बहाना मक्का जाने का कर रहे हैं।

सेवा=शिवाजी। चाव=चाह, उत्साह। डौंगा=छोटी और भद्दी नाव। दरियाव=समुद्र।



किबले की ठौर बाप बादसाह साहजहाँ,
ताको कैद कियो मानो मक्के आगि लाई है।

बड़ो भाई दारा वाको पकरि कै कैद कियो,
मेहर हू नाहिं मां को जायो सगो भाई है ॥
बन्धु तो मुराद बक्स बादि चूक करिबे को,
बीच दे कुरान खुदा की कसम खाई है ।
भूषन सुकवि कहै सुनो नवरंगजेब,
एते काम कीन्हे तऊ पातसाही छाई है ॥१३॥

भावार्थ

हे औरंगज़ेब, सुनो, तुमने पूज्य पिता शाहजहाँ को क़ैद कर के घोर अनर्थ किया, मानो अपने तीर्थ स्थान मक्के को जला कर भस्म कर दिया है। एक ही पेट के सगे भाई दारा को पकड़ कर कैद करने में भी तुम्हें तनिक दया न आई। अपने भाई मुरादबख्स के साथ विश्वासघात न करने की तुमने व्यर्थ ही परमेश्वर की क़सम खाई। इतने अनर्थ कर चुकने पर भी तुम्हारे मनमें बादशाही का घमंड है।

टिप्पणी

यहां उत्प्रेक्षा अलंकार है। जहां किसी उपमेय का कोई उपमान बुद्धि द्वारा कल्पित किया जाता है, वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसके वाचक शब्द मनु, जनु, मानो, प्रायः आदि हैं। यहां, 'बाप को कैद करके मानो मक्के में आग लगा दी' उत्प्रेक्षा है।

छन्द १३ और १४ के विषय में कहते हैं कि भूषण ने ये दोनों कवित्त बादशाह औरंगज़ेब से अभयदान लेकर उसीके सामने भरे दरबार में निर्भयता पूर्वक सुनाये थे।

क़िबला=मुसलमानों का तीर्थस्थान, पश्चिम दिशा। ठौर=समान। आगि लाई है=आगी लगा दी है। नवरंगजेब=औरंगज़ेब।



हाथ तसबीह लिये प्रात उठै बन्दगी कों,
आपही कपटरूप कपट सुजप के।
आगरे में जाय दारा चौक में चुनाय लीन्हो,
छत्रहू छिनायो मानो मरे बूढ़े बप के॥
कीन्हों है सगोत घात सो मैं नाहिं कहौं,
फेरि पील पै तोरायो चार चुगल के गप के।
भूषन भनत छरछन्दी मति मन्द महा,
सौ सौ चूहे खाय के बिलारी बैठी तप के॥१४॥

भावार्थ

हे औरंगज़ेब तुम स्वयं कपट के रूप हो। बड़े प्रातःकाल उठ कर लोगों को दिखाने के लिए तो माला लेकर परमेश्वर का भजन करते हो, किन्तु कर्म ऐसे हैं कि आगरे के क़िले में अपने सगे भाई दारा को जीता गड़वा दिया, जिन्दा बाप को मरा समझ कर उसके नाम पर आपही राज्य करने लगे। अधिक मैं कहाँ तक कहूँ, बिना ही बिचार किये चुगल दूतों के कहने सुनने से अपने ही वंशवालों को हाथी से दबा कर मरवा डाला। तुम बड़े ही कपटी और खोटे हो पर लोगों की दृष्टि में महात्मा बन रहे हो, मानो सैकड़ों चूहे खा कर बिल्ली तपस्या करने को बैठी हो।

टिप्पणी

यहां छेकोक्ति अलंकार है। जहां पहले किसी बात को कह कर उसी की उपमा किसी कहावत (लोकोक्ति) से दी जाती है, वहां छेकोक्ति अलङ्कार होता है। यहां औरंगज़ेब के कपट को 'बिल्ली' की उपमा लोकोक्ति से दी गई है।

तसबीह=(फ़ारसी) माला। बप=बाप, अनुप्रास के लिए 'बप' कर दिया है। सगोत=अपने गोत्र (वंश)वाले।



कैयक हजार जहां गुर्ज बरदार ठाढ़े,
करि के हुस्यार नीति पकरि समाज की।
राजा जसवंत को बुलाय के निकट राख्यो,
तेऊ लखैं नीरे जिन्हें लाज स्वामि काज की ॥
भूषन तबहुं ठठकत ही गुसुल खाने,
सिंह लौं झपट गुनि साह महाराज की।
हटकि हथ्यार फड़ बांधि उमरावन की,
कीन्ही तब नौरंग ने भेंट सिवराज की ॥१५॥

भावार्थ

जब औरंगजेब ने शिवाजी को अपने पास मिलने के लिये बुलाया, तब शाही दरबार करने के क़ायदे से कई हजार गदाधारी वीर-पुरुष सावधानी से खड़े कर दिये, जोधपुर-नरेश महाराजा यशवन्तसिंह को बुला कर अपने पास बिठा लिया, और और भी बहुत से स्वामि-भक्त सरदार बादशाह की

रक्षा करने को समीप खड़े हो गये। किन्तु, भूषण कहते हैं कि इतना सब होनेपर भी औरंगज़ेब डर रहा था कि कहीं शिवा जी सिंह की तरह हमारे ऊपर यकायक आक्रमण न कर उठें। इसलिये शिवाजी से बिना हथियार लिये ही सरदारों की क़तार बांध कर औरंगज़ेब ने स्नानागार में डरते डरते भेंट की।

टिप्पणी

औरंगज़ेब और सिवा जी की भेंट दिल्ली में संवत् १७२३ में हुई थी।

कैयक=कितने ही। गुर्ज=गदा। गुसुलखाना (फ़ारसी)=स्नानागार। नौरंग=औरंगज़ेब। फड़=क़तार।



सबन के ऊपर ही ठाढ़ो रहिबे के जोग,
ताहि खरो कियो जाय जारिन के नियरे।
जानि गैर मिसिल गुसैल गुसा धरि उरि,
कीन्हो न सलाम न बचन बोले सियरे॥
भूषन भनत महाबीर बलकन लागो,
सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे।
तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि भये,
स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पियरे॥१६॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि औरंगज़ेब ने दरबार में पहुँचते ही सबसे उच्च स्थान पाने योग्य शिवाजी को मामूली छोटे छोटे सरदारों के पास खड़ा होने का हुक्म दिया। नियम विरुद्ध

स्थान पाने के कारण शिवाजी ने क्रोधित होकर बादशाह से न तो सलाम ही किया और न नम्र वचन ही कहे। उलटे इस अपमान से क्षुब्ध होकर वह बादशाह से मनमानी बातें कहने लगे, जिससे सारे दरबारी लोग भय के मारे कांप उठे। शिवाजी का क्रोध से लाल मुंह देख कर औरंगज़ेब का चेहरा फीका तथा सिपाहियों का पीला पड़ गया।

टिप्पणी

यहां विषमालङ्कार है। अनमिल वस्तुओं वा घटनाओं के वर्णन में इस अलङ्कार का प्रयोग किया जाता है।

खरो कियो=खड़ा किया। जारिन=पंजहज़ारी आदि छोटे छोटे सरदार। बलकन लागो=बकने लगे। जियरे=जी। पियरे=पीले।



राना भो चमेली और बेला सब राजा भये,
ठौर ठौर रस लेत नित यह काज है।
सिगरे अमीर आनि कुंद होत घर घर,
भ्रमत भ्रमर जैसे फूल की समाज है॥
भूषन भनत सिवराज बीर तैंही देस,
देसन में राखी सब दच्छिन की लाज है।
त्यागे सदा षट-पद पद अनुमानि यह,
अलि नवरंगजेब चंपा सिवराज है॥१७॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि औरंगज़ेब रूपी भौंरा प्रत्येक स्थान पर मँडराता हुआ रस ले रहा है, अर्थात् जगह जगह के

राजाओं पर चढ़ाई कर उन्हें परास्त कर रहा है। राणा और राजा लोग चमेली और बेला के समान, और सब सरदार लोग कुन्द के फूल के समान हैं। किन्तु हे वीरवर शिवाजी, इन सबों के बीच में दक्षिण देश की बात आपही ने रखी है, यहां के फूलों का रस यह भौंरा नहीं ले सका है। ऐसा अनुमान होता है कि यदि औरंगज़ेब भौंरा है, तो आप चम्पा के के फूल हैं, जिसके पास भौंरा प्रायः जाता ही नहीं।

टिप्पणी

यहां समअभेद रूपक अलङ्कार है। जहां उपमेय और उपमान की पूरी पूरी एक रूपता दिखाई जाती है, वहां सम अभेद रूपक अलङ्कार होता है। यहां शिवाजी उपमेय और चम्पा उपमान है। चम्पा में तीक्ष्ण सुगंधि तथा शिवाजी में प्रचंड प्रताप होने से दोनों की पूर्ण एक रूपता होती है।

षटपद-पद=भौंरे की पदवी अथवा कार्य अर्थात् फूलों का रस लेना।



कूरम[1] कमल कमधुज[2] है कदम फूल,
गौर[3] है गुलाब राना[4] केतकी बिराज है।

---

(१) कूर्म अर्थात् कछवाहा नाम की क्षत्रियों में एक उपजाति होती है। ये लोग जयपुर में राज्य करते हैं।

(२) कबन्धज; कहते हैं कि इनके पूर्वपुरुष कन्नौजवाले जयचन्द्र का युद्धस्थल में कबन्ध (रुण्ड) उठा था। ये लोग जोधपुर में राज्य करते हैं।

(३) ये लोग क्षत्रियों की एक उपजाति में हैं।

(४) यहां 'राणा' से उदयपुराधीश महाराणा राज सिंह से तात्पर्य है। राणा की उपमा केतकी से दी गई है। जैसे केतकी में कांटे होनेसे भौंरा

पांडुरी पँवार जूही सोहत हैं चन्दावत,
सरस बुंदेला सो चमेली साजबाज है ॥
भूषन भनत मुचुकुन्द[४] बड़ गूजर हैं,
बघेले बसंत सब कुसुम समाज है।
लेइ रस एतेन को बैठि न सकत अहै,
अलि नवरंग जेब चंपा सिवराज है ॥१८॥

भूषण कहते हैं कि कछवाह वंशी जयपुर नरेश कमल हैं, कबन्धज वंशी जोधपुर के राजा कदम्ब के फूल हैं, गौर क्षत्री लोग गुलाब हैं, उदयपुराधीश महाराणा कँटीली केतकी हैं, भ्रमर वंशी पाँडुरी हैं, चन्दावत राजपूत जूही हैं, राजसी ठाट वाले बुँदेला लोग चमेली हैं, गूजर मुचकुन्द हैं और बघेले लोग बसन्त ऋतु में खिलनेवाले अन्य सब फूलों के समूह हैं। औरंगज़ेब रूपी भौंरा इन सब फूलों का पराग ले कर शिवाजी रूपी चम्पा के फूल पर बैठ भी नहीं सकता है, अर्थात् औरंगजेब ने इन सब राजाओं को परास्त कर दिया, किन्तु चम्पा की तीक्ष्ण गंध के समान प्रचंड प्रतापी शिवाजी के पास पहुँच भी न सका।

टिप्पणी

यहां सम अभेद रूपक अलङ्कार है। इसका लक्षण छन्द १७ में दिया है।



बड़ी कठिनता से उसका रस ले पाता है, वैसे ही औरंगज़ेब बड़ी बड़ी आपत्तियां झेल कर राणा को वश में कर सका था।

(४) एक प्रकार का फूल, जिसके लेप से सिर की पीड़ा दूर होती है।

देवल गिरावते फिरावते निसान अली,
ऐसे डूबे राव राने सबी गये लबकी।
गौरा गनपति आप औरन कों देत ताप,
आपनी ही बार सब मारि गये दबकी॥
पीरा पयगंबरा दिगंबरा दिखाई देत,
सिद्ध की सिधधाई गई रही बात रब की।
कासी हू की कला जाती मथुरा मसीत होती,
सिवाजी न होतो तो सुनति होत सब की॥१६॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि मुसलमानों ने देवस्थान तोड़ कर गिरा दिये और अली के झंडे फहरा रहे हैं। सब राव राने डर कर भाग गये हैं। दूसरों को दंड देने वाले पार्वती और गणेश डर कर छिप गये हैं। पीर और पैगम्बर तथा औलिया दिखाई दे रहे हैं। सिद्ध लोगों की सिद्धता चली गई और मुसलमानी मत की दुहाई फिर रही है। यदि शिवाजी न होते, तो काशी का प्रत्यक्ष प्रभाव चला जाता, मथुरा में मसजिदें बन जातीं और हिन्दुओं को ख़तना कराना पड़ता।

टिप्पणी

दिगम्बरी—इसका अर्थ किसी किसी टिप्पणीकार ने प्रभावशून्य लिखा है, अर्थात् पीर पैगम्बर और सिद्ध सभी प्रभावशून्य या निस्तेज हो गये थे मुसलमानों के राज्य-काल में पीर पैगम्बरों का निस्तेज हो जाना असंगत मालूम पड़ता है 'दिगम्बरों' से यहाँ 'औलिया' अर्थात् मुसलमानी नग्न परमहंसों से तात्पर्य है, अथवा 'दिगंबरा दिखाई देत' से यह अर्थ हो

सकता है कि पीर पैगंबर लोग निडर हो खुले मैदान में फिरते दिखाई देते हैं।

संवत् १७२६ में औरंगज़ेब ने सहस्रों हिन्दू-मन्दिर तुड़वाये। मथुरा में महाराजा वीरसिंहदेव निर्मित केशवरायका देहरा तथा काशी में विश्वनाथ जी का मन्दिर गिरवा कर उनके स्थान पर मसजिदें बनवाईं।

छन्द १६,२० और २१ इसी घटना से सम्बन्ध रखते हैं।

गये जबकी=भाग गये। पीरा=पीर, मुसल्मानी सिद्ध। पयगंबरा=पैगम्बर; ईश्वर दूत। रब=निराकार परमेश्वर। सुनति=खतना, मुसल्मान होने का मुख्य संस्कार। मसीत=मसजिद।



सांच को न मानै देवी देवता न जानै,
अरु ऐसी उर आनै मैं कहत बात जब की।
और पातसाहन के हुती चाह हिन्दुन की,
अकबर साहजहां कहैं साखि तब की॥
बब्बर के तब्बर हुमायूं हद्द बांधि गये,
दोनों एक करी ना कुरान वेद ढब की।
कासी हू की कला जाती मथुरा मसीत होती,
सिवाजी न होतो तो सुनति होत सब की॥२०॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि मैं उस समय की बात कह रहा हूं जब और और बादशाह राज्य करते थे। वे लोग हिन्दुओं पर प्रेम करते थे, जिस के साक्षी अकबर और शाहजहां हैं। बाबर के पुत्र हुमायूं ने भी हिन्दुओं की मर्यादा ज्यों की त्यों

रखी थी। उन्होंने कुरान के अनुसार वैदिक धर्म वालों को ज़बरदस्ती मुसलमान नहीं बनाया था। किन्तु औरंगज़ेब सत्य का निरादर और देवी देवताओं की प्रतिष्ठा भंग कर रहा है। यदि शिवा जी न होते तो काशी का प्रत्यक्ष प्रभाव चला जाता, मथुरा में मसजिदें दिखाई देतीं और हिन्दुओं को ख़तना करा-कर मुसलमान होना पड़ता।

टिप्पणी

यह बहुत भद्दा छन्द है। विचार-तारतम्य ठीक नहीं। पहिले चरण का अर्थ भी स्पष्ट नहीं है।

तब्बर=(पंजाबी—टब्बर) पुत्र।



कुंभकन्न असुर औतारी अवरंगजेब,
कीन्ही कत्ल मथुरा दोहाई फेरी रब की।
खोदि डारे देवी देव सहर महल्ला बांके,
लाखन तुरुक कीन्हे छूटि गई तबकी॥
भूषन भनत भाग्यो कासीपति विश्वनाथ,
और कौन गिनती में भूली गति भवकी।
चारों वर्ण धर्म छोड़ि कलमा निवाज पढ़ि,
सिवाजी न होतो तो सुनति होति सबकी॥२१॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि कुंभकर्ण राक्षस के अवतार औरंगज़ेब ने मथुरा में क़तल आम कराकर मुसल्मानी मत चला दिया।

देवी देवताओं की मूर्तियां उखाड़ कर फेंक दीं। सुन्दर नगर और बस्तियाँ नष्ट कर दीं। लाखों हिन्दुओं को, उनका साम्प्रदायिक मत छुड़ा कर, मुसलमान बना लिया। और की तो गिनती ही क्या स्वयं काशीश्वर विश्वनाथ जी शक्तिहीन होकर भाग गये। यदि उस समय शिवा जी न होते, तो सब हिन्दुओं को मुसलमान बन कर और वर्णाश्रम धर्म छोड़ कर कलमा और नमाज़ पढ़नी पड़ती।

टिप्पणी

कलमा—मुसलमानी मत का मुख्य मंत्र। मंत्र यह है—"ला इलाह इल्लल्लाह मुहम्मदिन् रसूलिल्लाह"—अर्थात् ईश्वर अद्वितीय है और मुहम्मद उसका प्रतिनिधि है।

नमाज़—मुसलमानी मतानुसार परमेश्वर की प्रार्थना, जिसे मुसलमान लोग दिन रात में पांच बार पढ़ते हैं।

संवत् १७२६ में औरंगज़ेब ने मथुरा में केशवराय का देहरा तथा काशी में विश्वनाथ एवं बिन्दुमाधव के मन्दिर तोड़े थे, और उनके स्थान पर मसजिदें बनवाई थीं।

कुंभकन=कुंभकर्ण; रावण का महा प्रतापी छोटा भाई। तबकी=(अरबी शब्द तबक़=पर्त) तबकाबन्दी साम्प्रदायिक धर्म। भव=भव, महादेव; अनुप्रास के लिए 'व' को 'ब' कर दिया है।



दावा पातसाहन सों कीन्हो सिवराज बीर,
जेर कीन्हो देस हद्द बांध्यो दरबारे से।
हठी मरहठी ता में राख्यो न मवास कोऊ,
छीने हथियार डोलैं बन बन जारे से॥

आमिष अहारी मांसाहारी दे दे तारी नाचैं,
खांड़े तोड़े किरचैं उड़ाये सब तारे से।
पील सम डील जहां गिरि से गिरन लागे,
मुंड मतवारे गिरैं झुंड मतवारे से ॥२२॥

भावार्थ

वीर वर शिवा जी ने बादशाहों की बराबरी करने का हौसिला किया। सारे देश को पराजित कर अपने राज्य की सीमा दिल्ली के दरबार से अलग ही काट ली। हठी मरहठों ने ऐसे कोई क़िलेवाले न छोड़े, जिन के हथियार न छीन लिये हों। मरहठे लोग बन में लुटेरों की भाँति घूमने लगे। रणस्थल में मांस भक्षण करनेवाले भूत प्रेत तालियाँ, बजा बजा कर नाचने लगे। मरहठों ने शत्रुओं की तलवारें, किरचें और बन्दूकें तार की तरह तोड़ ताड़ कर फेंक दीं। हाथी के ऐसे मोटे शरीरवाले पहाड़ की नाईं भरभरा कर गिरने लगे और मुसलमानी मतवाले घमंडियों के सिर कट कट कर मदोन्मत्त लोगों के झुंडकी तरह गिरने लगे।

टिप्पणी

यहां पूर्णोपमालङ्कार है। जहां उपनाम, उपमेय, वाचक और धर्म स्पष्ट रूप से आते हैं, वहां पूर्णोपमालङ्कार होता है। इस छंद के चौथे चरण में यमक अलङ्कार भी है।

पातसाह=बादशाह। मवास=क़िला। बनजारे=लुटेरे। तौड़े=तोड़ेदार बन्दूकें। तारे से=तार से, अनुप्रास के लिए 'तार' का 'तारे' कर दिया है।



छूटत कमान और गोली तीर बानन के,
होत कठिनाई मुरचानहू की ओट में।
ताही समय सिवराज हांक मारि हल्ला कियो,
दावा बांधि परा हल्ला बीर बर जोट में॥
भूषन भनत तेरी हिम्मति कहां लौ कहों,
किम्मति यहां लगि है जाकी भट झोट में।
ताव दै दै मूंछन कँगूरन पै पांव दै दै अरि,
मुख घाव दै दै कूदि परे कोट में॥२३॥

भावार्थ

जब मुसलमानों के बाणों और गोलियों की वर्षा से मोरचों की आड़ में भी बचना कठिन हो रहा था, उस समय महाराजा शिवाजी ने ललकार कर हमला कर दिया और शूरवीरों के बीच में घोर हाहाकार मच गया। हे वीर वर शिवाजी, आपके साहस का वर्णन कहां तक करूँ? वीरों के समूह में आप का यश इतना फैला हुआ है कि आप को देखते ही निःसाहस मरहट्ठे लोग बड़ी ही उमंग से मूंछ मरोरते हुए कंगूरों पर चढ़ कर शत्रुओं पर प्रहार करने लगे हैं और उनके क़िले में कूद पड़े हैं।

टिप्पणी

कमान=धनुष। हल्ला=(१) हमला, आक्रमण; (२) शोर, हाहाकार। जोट=जोड़, बीच। झोट=समूह।

उतै पातसाह जू के गजन के ठट्ट छूटे,
उमड़ि घुमड़ि मतवारे घन कारे हैं।
इतै सिवराज जू के छूटे सिंहराज औ,
बिदारे कुंभ करिन के चिक्करत भारे हैं॥
फौजें सेख सैयद मुगल औ पठानन की,
मिलि इखलास खां हू मीर न सँभारे हैं।
हद्द हिन्दुवान की बिहद्द तरवारि राखी,
कैयो बार दिल्ली के गुमान झारि डारे हैं॥२४॥

भावार्थ

उधर से बादशाह औरंगज़ेब के मतवाले हाथियों के झुण्ड के झुण्ड बादलों की काली घटा के समान इकट्ठे हो कर छूटने लगे, तो इधर से महाराजा शिवाजी के सिंह रूपी शूरवीर गरजते हुए हाथियों के मस्तक विदीर्ण करने लगे। बड़े बड़े हाथी चिंघाड़ने लगे। शेख, सैयद, मुग़ल और पठानों की फौजें सरदार इख़लास खां भी न सँभाल सका। शिवाजी ने अपनी बड़ी तलवार के बल से कई बार दिल्ली का गर्व खर्व कर के हिन्दुओं की मर्यादा ज्यों की त्यों रक्खी।

टिप्पणी

संवत १७२६ में सलहेरि की लड़ाई में इख़लास खां मुग़लों का सेनापति बनाया गया था।

ठट्ट=झुंड। करिन के=हाथियों के। कुंभ=मस्तक। मीर=सरदार। बिहद्द=बड़ी। कैयो=कई।



जीत्यो सिवराज सलहेरि को समर सुनि,
सुनि असुरन के सुसीने धरकत हैं।
देवलोक नागलोक नरलोक गावैं जस,
अजहूं लों परे खग दन्त खरकत हैं॥
कंटक कटक काटि कीट से उड़ाये केते,
भूपन भनत मुख मोरे सरकत हैं।
रन भूमि लेटे अधफेंटे अरसेते परे,
रुधिर लपेटे पठनेटे फरकत हैं॥२५॥

भावार्थ

यह सुन कर कि महाराजा शिवाजी ने सलहेरि की लड़ाई जीत ली है, मुसलमानों के कलेजे धड़कने लगे। स्वर्ग, पाताल और मृत्यु लोक में शिवाजी का यश गान हो रहा है। तीरों की गांसियाँ अब भी पीड़ा दे रही हैं। शिवाजी ने शत्रुओं की फौजें काट काट कर कीड़े मकोड़े की तरह उड़ा दीं और कुछ बचे खुचे शत्रु पीठ दिखा कर लम्बे हुए। रणभूमि में अशक्त पापी नव युवक पठान रक्त से भीगे हुए फड़ फड़ा रहे हैं।

टिप्पणी

सलहेरि नामक स्थान पर शिवाजी ने औरंगजेब के भेजे हुए दिलेरखां और इखलासखां को हरा कर पूर्ण विजय पाई थी। यह युद्ध संवत् १७२६ में हुआ था।

यहां छेकानुप्रास अलंकार है। जहां बहुत से शब्दों के आदि के अक्षर एक से होते हैं वहां छेकानुप्रास अलङ्कार होता है। जैसे यहां कंटक, कटक,

काटि, कीट शब्दों के आदि में 'क' तथा सिवराज सलहेरि, समर, सुनि सुनि शब्दों के आदि में 'स' अक्षर का प्रयोग किया गया है।

असुर=राक्षस, यहां अत्याचारी मुसलमानों से तात्पर्य है। खग दन्त= तारों की गांसियां। कंटक=शत्रु। अघफेंटे=पापी। अरसेटे=अशक्त। पठनेटे=नवयुवक पठान।



मालती सवैया।

केतिक देस दल्यो दल के बल,
दच्छिन चंगुल चाँपि कै चाख्यो
रूप गुमान हर्‌यो गुजरात को,
सूरत को रस चूसि कै नाख्यो॥
पंजन पेलि मलेच्छ मले सब,
सोइ बच्यो जिहि दीन ह्वै भाख्यो।
सो रँग है सिवराज बली जिन,
नौरँग में रँग एक न राख्यो॥२६॥

भावार्थ

शिवाजी ने अपनी सेना के बल से कितने देश ध्वस्त नहीं कर डाले? दक्षिण प्रान्त सिंह की नाई चंगुल में दबा कर भक्षण कर लिया। गुजरात की शोभा और घमंड धूल में मिला दिया। सूरत को भी उसका रस अर्थात् वैभव लेकर नष्ट कर दिया। मुसलमानों को पंजों से चीड़ फाड़ कर मूर्छित कर दिया! हां, दीनता स्वीकार करने पर ही कोई

कोई बच सका है। शिवाजी का वह रंग है जिस ने औरंगज़ेब की एक भी न चलने दी।

टिप्पणी

सूरत (गुजरात) को शिवाजी ने संवत् १७२१ और १७२६ में दो बार लूटा था।

यहां काव्यलिङ्ग अलङ्कार है। काव्य में कथित प्रसंग का ठीक ठीक परिचय कराने से काव्यलिङ्ग अलङ्कार कहलाता है। यहां पर 'केतिक देश दल्यो, कह कर दक्षिण, गुजरात, सूरत आदि देशों का पीछे से नामोल्लेख किया गया है।

यह छन्द मालती सवैया है—इसके प्रत्येक चरण में ७ भगण और अंत में दो गुरु होते हैं।

चांपि कै=दबा कर। नारुयो=नष्टकिया। सो रँग=वह रंग, प्रताप।



सूबा निरानँद बादर खान गे,
लोगन बूझत ब्यौंत बखानो।
दुग्ग सबै सिवराज लिये धरि,
चारु बिचारु हिये यह आनो॥
भूषन बोलि उठे सिगरे,
हुतो पूना में साइत खान को थानो।
जाहिर है जग में जसवंत,
लियो गढ़ सिंह में गीदर बानो॥२७॥

भावार्थ

सूबेदार बहादुर खां ने निरुत्साह हो लोगों से पूँछा कि अब कोई उपाय बताओ। अच्छे अच्छे क़िले तो सभी शिवा जी ने अपने अधीन कर लिये हैं। भूषण कहते हैं कि इस पर सब लोग बोल उठे, 'आप कहां भूले हैं?' यशस्वी शिवा जी संसार भर में प्रख्यात हैं। उनके मारे जोधपुर नरेश जसवंत सिंह और शाइस्ता खाँ, जिन्होंने पूना में अपना अड्डा जमा लिया था, अपना सिंह-पद छोड़ गीदड़ की तरह भाग गये। (फिर आपकी तो गिनती ही किस में है ?)

टिप्पणी

संवत १७२० में औरंगजेब ने जसवंत सिंह और शाइस्ताखां को पूना में शिवाजी का जोश कम करने को एक लाख फौज के साथ भेजा था। शिवाजी ने अपने प्रचंड बल से इन्हें परास्त कर दिया था।

सूबा=सूबेदार। बादर खान=(बहादुर खां) गुजरात का सूबेदार। ब्यौंत=उपाय। दुग्ग=दुर्ग, क़िला। साइतखान=शाइस्ता खां। गीदर बानो=सियार का काम, डरपोंक पन।



कवित्त-मनहरण।

जोरि करि जैहैं जुमिला हू के नरेस पर,
तोरि अरि खंड खंड सुभट समाज पै।
भूषन असाम रूम बलख बुखारे जैहैं,
चीन सिलहट तरि जलधि जहाज पै॥

सब उमरावन की हठ कूरताई देखो,
कहैं नवरंगजेब साहि सिरताज पै।
भीख मांगि खैहैं बिन मनसब रैहैं,
पै न जैहैं हजरत महाबली सिवराज पै ॥२८॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि सब सरदारों की हठ और कायरता तो देखो, ये मारे डर के औरंगज़ेब से कहते हैं कि 'हम लोग सारे राजाओं को हरा देंगे। योद्धाओं के समाज के टुकड़े टुकड़े कर देंगे। हम लोग आसाम और सिलहट तथा जहाज पर चढ़ समुद्र पार कर चीन, रूम और बलख बुखारे जायँगे। हम बिना ही पदवी के भीख माँग कर रहेंगे, यह सब करेंगे, पर उस महाप्रतापी वीरवर शिवा जी पर चढ़ाई करने न जायँगे'।

टिप्पणी

जुमिला=सब जगह। मनसब=पदवी, ओहदा। कूरताई=कायरता अथवा कृतघ्नता। हजरत=महामान्य, महा प्रतापी।



चन्द्रावल[1] चूर करि जावला[2] जपत कीन्हो,
मारे सब भूप औ सँहारे पुर धाय कै।

(१) चन्द्रावल अथवा चन्द्रराव मोरे जावली का राजा था। (२) जावली एक स्थान का नाम है। यहां के राजा चन्द्रराव मोरे को शिवा जी ने संवत् १७१२ में मार कर जावली पर अपना अधिकार कर लिया था।

भूषन भनत तुरकान दल थंभ काटि,
अफ़ज़ल[३] मरि डारे तबल बजाय कै॥
एदिल[४] सों बेदिल हरम कहैं बार बार,
अब कहा सोवो सुख सिंहहिं जगाय कै।
भेजना है भेजो सो रिसालैं, सिवराज, जू
की बाजी करनालैं परनालैं[५] पर आय कै॥२६॥

भावार्थ

बीजापुर के हाकिम आदिल शाह से उसकी रंजीदा बेगमें बार बार कहती हैं कि जिस शिवा जी ने चन्द्रावल (चन्द्र राव) राजा को हरा कर जावली पर अपना अधिकार जमा लिया है, सब राजा मार कर उनके नगरनिवासियों का संहार कर डाला है और जिसने तुर्कों के सेनापतियों को काट कर तथा अफ़ज़ल खाँ को मार कर डंके पर चोट दी है, उस शिवा जी रूपी शेर को जगा कर आप सुख से क्यों सो रहे हैं? जब आपको शिवा जी के पास खिराज (राज्य कर) भेजना ही है, तो शीघ्र ही भेजिये। आपके राज्यान्तर्गत परनाल के क़िले पर उस की तोपें छूटने लगी हैं।

टिप्पणी

यहां अनुप्रासालंकार है। कहीं छेक है और कहीं वृत्ति है। जब एक ही अक्षर शब्दों में कुछ अन्तर से आता है, तब छेक होता है, जैसे एदिल

(३) बीजापुर का हाकिम अफ़ज़ल खां जिसे संवत् १७१६ में शिवाजी ने बड़ी ही चतुराई से मारा था। (४) बीजापुर का शासक आदिलशाह। (५) परनाल नाम का क़िला बीजापुर राज्य में था। संवत् १७२० में शिवा जी ने इसे अपने अधीन कर लिया था।

बेदिल, करनालैं, परनालैं। और जब एक ही अक्षर शब्दों के आदि में आता है तब छत्यनुप्रास होता है जैसे चन्द्रावल चूर, जावली जपत, भूषन भनत, सोवो सुख सिंहहिं आदि।

दलथंभ=दल को थाँभनेवाले अर्थात् सेनापति। तबल=डंका। रिसालैं =खिराज, राज्य-कर। करनालैं=तोपैं।



मालती-सवैया

साजि चमू जनि जाहु सिवा पर,
सोवत सिंह न जाय जगावो।
तासों न जंग जुरौ न भुजंग महा,
विष के मुख में कर नावो॥
भूषन भाषति बैरि बधू जनि,
एदिल औरँग लौं दुख पावो।
तासु सुलाह की राह तजौ मति,
नाह दिवाल की राह न धावो॥३२॥

भावार्थ

शत्रुओं की स्त्रियां अपने अपने पति से कहती हैं कि सेना सजा कर शिवाजी पर चढ़ाई मत करो, क्योंकि उसे छेड़ना मानों सोते हुये सिंह को जगा देना है। उस के साथ मत लड़ो, क्योंकि उस से युद्ध करना मानों महा विषैले साँप के मुख में हाथ डालना है। बीजापुर के शासक आदिलशाह और औरंगज़ेब की भांति आफ़त में मत पड़ो। हे नाथ,

उससे मेल करने का विचार न छोड़ो और जान बूझकर उस मार्ग पर न दौड़ो, जहाँ दीवार की टक्कर लगे।

टिप्पणी

यहां लोकोक्ति अलङ्कार है—जहां पर किसी कहावत को रख कर कोई बात कही जाती है, वहां लोकोक्ति अलङ्कार होता है। यहां 'सोवत सिंह न जगाओ' 'भुजंग के मुख में कर न नावो' और 'दिवाल की राह न धावो' आदि कहावतों का प्रयोग किया गया है। यह छन्द मालती-सवैया है—इसका लक्षण छन्द २६ में दिया गया है।

जनि=मत। नावो=डालो। एदिल=आदिलशाह, बीजापुर का शासक। लौं=समान। सुलाह=सन्धि, मेल। नाह=नाथ, पति।



छप्पय

विज्जपूर[1] विदनूर[2] सूर सर धनुष न संधहिं।
मंगल बिनु मल्लारि[3] नारि धम्मिल नहिं बंधहिं॥
गिरत गब्भ कोटै गरब्भ चिंजी चिंजा डर।
चाल[4] कुंड दल कुंड गोल कुंडा संका उर॥
भूषन प्रताप सिवराज तव
इमि दच्छिन दिसि संचरै।
मधुराधरेस[1] धक धकत सो,
द्रबिड़ निबिड़ डर दबि डरै॥३१॥

(१) बीजापुर। (२) एक स्थान जो गुजरात में था। (३) मलाबार देश। (४) चाल कुंड एक बन्दरगाह है, इसके पास सन् १५२१ ई० में ईसाइयों ने एक क़िला बनवाया था।

भावार्थ

भूषण कहते हैं कि हे महाराज शिवाजी, आप का प्रताप दक्षिण दिशा में ऐसा छा गया है कि बीजापुर और बिदनूर के शूरवीर धनुष पर बाण नहीं चढ़ाते हैं। मलाबार की स्त्रियाँ सौभाग्य चिह्न छोड़कर अपने बाल भी नहीं बाँधती हैं। कोट के भीतर भली भांति रक्षित रहने पर भी शत्रुओं की स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं। उनके लड़के लड़कियाँ डरते ही रहते हैं। चालकुंड, दलकुंड और गोलकुंडा के क़िले वालों के हृदय डर के मारे धड़कते रहते हैं। मधुरा (मदुरा) का राजा डरता रहता है और द्राविड़ लोग महाभय से छिपे रहते हैं।

टिप्पणी

यहां अनुप्रास अलङ्कार है। इसका लक्षण छन्द ६ में दिया गया है।

यह छन्द छप्पय है—इसके प्रथम चार चरण काव्य (२४ मात्रा का छन्द, जिसकी यति ११वीं मात्रा पर होती है) छन्द के और अंत के दो चरण उल्लाला छन्द (२६ मात्रा का छन्द, जिसकी यति १३वीं अथवा १५वीं मात्रा पर होती है) के होते हैं।

संवत् १७३० में शिवाजी ने 'परनाले' पर विजय-लाभ कर के सारे करनाटक को दबा लिया था। इसी साल का वर्णन छन्द ३० और ३१ में किया गया है।

मङ्गल=सौभाग्य। धम्मिल्ल=बाल। गब्भ=गर्भ। कोटै गरब्भ=कोट के भीतर। चिंजी चिंजा=चिरंजीव पुत्री और पुत्र। निबिड़=महा।



(१) वर्त्तमान मदुरा, जो मद्रास प्रान्त में एक ज़िला है।

कवित्त-मनहरण

अफ़ज़ल खान गहि जाने मयदान मारा,
बीजापुर गोलकंडा मारा जिन आज है।
भूषण भनत फरासीस[1] त्यों फिरंगी मारि,
हबसा[2] तुरुक डारे उलटि जहाज है॥
देखत में खान[3] रुसतम जिन खाक किया,
सालति सुरति आजु सुनी जो अवाज है।
चौंकि चौंकि चकता कहत चहुंधा ते यारो,
लेत रहौ खबरि कहां लौं सिवराज है॥३२॥

भावार्थ

दिल्लीश्वर औरंगज़ेब चौंक चौंक कर अपने सरदारों से कहता है कि जिसने अफ़ज़ल खाँ को पकड़ कर उस पर विजय प्राप्त की, जिसने अभी हाल में ही गोलकुंडा वालों को पराजित किया, जिसने फरासीसियों और फिरंगियों को पछाड़ दिया, जिसने तुर्क और हबसियों के जहाज डुबा कर उनको हरा

(१) सूरत (गुजरात) को लूटते समय शिवा जी के साथ फ़रासीसियों और पुर्तगालवालों ने कुछ छेड़छाड़ की थीं। इसी पर नाराज़ हो शिवा जी ने इन लोगों की भी कुछ बस्तियां लूटी थीं। (२) जिस साल शिवा जी ने सूरत लूटी थी, उसी साल मक्का जाने वाले कुछ मुसलमानों (सैयदों) की नौकाएँ भी लूटी थीं। (३) सन् १६५६ ई० में परनाले के निकट शिवाजी ने रुस्तमे ज़मा खा को बड़ी भारी शिकस्त दी और उसे कृष्णा नदी के उस पार तक खदेड़ दिया।

दिया, जिसने बात की बात में रुस्तमे ज़मा खाँ को मिट्टी में मिला दिया और जिसकी आवाज़ आजभी हृदय को कँपा रही है, हे मित्रो, उस बहादुर शिवा जी का पता चारों तरफ़ से लगाये रहो कि वह कहां तक आ गया है।

टिप्पणी

मयदान मारा=विजय पाई। सालति=खटकती है। चकता=चग़ताई खां के वंश में उत्पन्न हुआ औरङ्गज़ेब। चहुँधा=चारों तरफ़।



फिरंगाने फिकिरि औ हद्सनि हबसाने,
भूषन भनत कोऊ सोवत न घरी है।
बीजापुर बिपति बिडरि सुनि भाजे सब,
दिल्ली-दरगाह बीच परी खरभरी है॥
राजन के राज सब साहन के सिरताज,
आज सिवराज पातसाही चित धरी है।
बलख बुखारे कसमीर लौं परी पुकार,
धाम धाम धूमधाम रूम साम परी है॥३३॥

भावार्थ

आज राजाधिराज महाराजा शिवाजी ने सम्राट होने की इच्छा की है। बेचारे फिरंगी चिंता के मारे और अफ्रीकावासी भय से घड़ी भर भी आंख नहीं बन्द कर सकते। बीजापुर का सर्वनाश सुनकर सब तितर बितर हो गये हैं। दिल्ली के बादशाही दरबार में घबड़ाहट मच रही है। शिवाजी के प्रताप की

धाक बलख, बुखारा, काशमीर, रूम और शाम के घर घर में बैठ गई है।

टिप्पणी

हद्दमनि=डर (हद्दसना से)। हबसाने=हबसी लोगों का देश (अफ्रीका)। दरगाह=दरबार। खरभरी=खलबली, घबड़ाहट।



गरुण को दावा सदा नाग के समूह पर,
दावा नाग जूह पर सिंह सिरताज को।
दावा पुरहूत को पहारन के कुल पर,
पच्छिन के गोल पर दावा सदा बाज को॥
भूषन अखंड नव खंड महि मंडल में,
तम पर दावा रवि किरन समाज को।
पूरब पछाँह देश दच्छिन ते उत्तर लौं,
जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को॥३४॥

भावार्थ

जैसे गरुड़ का सदा सर्पों के झुंड पर, महाबली सिंह का हाथियों के समूह पर, इन्द्र का पहाड़ों पर, बाज का पक्षि-संघ पर और सूर्य की किरणों का नवद्वीप और सारी पृथ्वी के अंधकार पर आधिपत्य है, उसी प्रकार महाराजा शिवाजी का—पूर्व से पच्छिम तथा उत्तर से दक्षिण तक जहाँ जहाँ बादशाही है, तहाँ तहाँ—आधिपत्य है।

टिप्पणी

पुरहूत को पहारन के कुल पर—पुराणों में लिखा है कि पहले पहाड़ों में पंखे लगे रहते थे और वे उड़ सकते थे। पहाड़ों के अत्याचार से दुखी हो कर देवताओं ने इन्द्र से विनय की। इन्द्र ने अपने बज्र से उनके पंख काट डाले। तब से इन्द्र का नाम "पर्वतारि" पड़ा।

यहाँ निदर्शनालंकार है। जहां भिन्नता रहते हुए भी दो वाक्यों का अर्थ समता-सूचक किया जाता है, वहां निदर्शनालंकार होता है। यहां 'गरुड़ को दावा सदा नाग के समूह पर' आदि वाक्यों की समता—'जहां पातसाही तहां दावा सिवराज को'—वाक्य से की है।

नाग=(१) सर्प। (२) हाथी। पुरहूत—इन्द्र।



दारा की न दौर यह रारि नहीं खजुवे[1] की,
बाँधिबो नहीं है किधौं मीर सहवाल को।
मठ बिस्वनाथ को न बास ग्राम गोकुल को,
देव[2] को न देहरा न मंदिर गोपाल को॥
गाढ़े गढ़ि लीन्हें और बैरी कतलान कीन्हें,
ठौर ठौर हासिल उगाहत है साल को।
बूड़ति है दिल्ली सो सँभारै क्यों न दिल्लीपति,
धक्का आनि लाग्यो सिवराज महाकाल को॥३५॥

---

(१) ज़िला फ़तेहपुर में बिन्दकी के पास खजुवा एक गाँव है। औरंगज़ेब ने संवत् १७१६ में यहां पर अपने भाई शुजा को हराया था। (२) 'देव' शब्द से ओड़छा-नरेश बीरसिंह देव से आशय है। इन्होंने मथुरा में 'केशवराय का देहरा' (मन्दिर) बनवाया था।

भावार्थ

यह दारा की चढ़ाई नहीं है और न खजुवा की लड़ाई है। यह मीर सहबाल (शहबाज खां) नामी सरदार का क़ैद कर लेना भी नहीं है। यह विश्वनाथ जी के मठ का गिरा देना, गोकुल में अड्डा जमा लेना तथा बीर सिंह देवनिर्मित केसव-राय के देहरे को मिट्टी में मिला देना भी नहीं है। बड़े बड़े क़िलों को जीत कर दुश्मनों को क़तल करता तथा सालाना खिराज लेता हुआ शिवाजी आ रहा है। ऐ दिल्लीश्वर, (औरंगज़ेब) देखो दिल्ली अब डूबने वाली है अर्थात् सर्व-नाश होने वाला है। संभालते बने तो अब भी संभालो क्योंकि महा काल रूपी शिवाजी का धक्का आ लगा है।

टिप्पणी

यहां आक्षेपालंकार है। पहले कोई बात कह कर फिर उसका निषेध करना आक्षेप कहलाता है। यहां, 'दारा की न दौर यह'–आदि वाक्यों में औरंगज़ेब की वीरता कह कर पीछे से उसी को नीचा दिखाया है।

जब शिवाजी के आतंक से ईरानी और पुर्तगाली राजा तथा बीजापुर और गोलकुण्डा उनको सालाना खिराज देने लगे थे, उसी समय का वर्णन कवि ने छन्द ३५, ३६, ३७ और ३८ में किया है।

दौर=चढ़ाई। हासिल=राज्यकर।



गढ़न गंजाय गढ़ धरन सजाय करि,
छाँड़े कत धरम दुवार दै भिखारी से।
साहि के सपूत पूत बीर सिवराज सिंह,
केते गढ़धारी किये बन बनचारी से॥

भूषन बखानै केते दीन्हैं बन्दीखाने,
सेख सैयद हजारी गहे रैयत बजारी से।
महतों से मुगुल महाजन से महाराज,
डाँड़ि लीन्हें पकरि पठान पटवारी से ॥३६॥

भावार्थ

साह जी के पराक्रमी पुत्र बीर शिवाजी ने शत्रुओंके क़िले तोड़ कर उन्हें घास फूस से भरा दिया। सेनापतियों को दण्ड दिया और बहुतों को धर्म समझ कर भिखारियों की तरह जाने दिया। कितने को जेल में डाल दिया। पंजहज़ारी आदि बड़े बड़े सेख और सैयद तेलियों और तमोलियों की नाईं फिर रहे हैं। मुग़ल महतों की तरह, बड़े बड़े राजा बनियों की तरह और पठान पटवारियों की तरह पकड़ लिये गये और उनसे जुरमाना ले लिया गया।

टिप्पणी

यहां पूर्णोपमालंकार है। इसका उदाहरण छन्द २ में दिया है। कत=कितनों को। बजारी रैयत=तेली, तमोली, आदि बाज़ार में रहने वाले लोग। महतों=गांव के मुखिया। पटवारी=गांव के किसानों से हिसाब किताब लेने वाला एक छोटा सा कर्मचारी।

❧

सक्र जिमि सैल पर, अर्क तम फैल पर,
बिघन की रैल पर लम्बोदर लेखिये।
राम दसकन्ध पर, भीम जरासंध पर,
भूषन ज्यों सिंधु पर कुंभज विसेखिये ॥

हर ज्यों अनंग पर, गरुड़ भुजंग पर,
कौरव के अंग पर, पारथ ज्यों पेखिये।
बाज ज्यों बिहंग पर, सिंह ज्यों मतंग पर,
म्लेच्छ चतुरंग पर, सिवराज देखिये ॥३७॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं, जैसे इन्द्र पर्वतों का, सूर्य अंधकार की राशि का और गणेश विघ्नों के समूह का नाश कर देते हैं। जैसे राम ने रावण को, भीम ने जरासन्ध को, अगस्त्य ने समुद्र को, शिव ने कामदेव को, गरुड़ ने सर्पों को, और अर्जुन ने कौरवों के पक्ष को नष्ट कर दिया और जैसे बाज को देख कर पक्षी और सिंह से हाथी डरता रहता है, उसी प्रकार महाराजा शिवाजी मुसल्मानों की चतुरङ्गिणी सेना को छिन्न भिन्न कर देने वाले हैं।

टिप्पणी

यहां मालोपमालंकार है। जब तक एक उपमेय के बहुत से उपमान कहे जाते हैं, तब मालोपमालङ्कार होता है। यहां 'शिवाजी' उपमेय के 'मक्र, अर्क, लंबोदर' आदि कई उपनाम लिखे गये हैं।

तम फैल=अन्धकार राशि। कुंभज=घड़े के उत्पन्न अगस्त्य मुनि, जिन्होंने समुद्र के सारे जल को सोख लिया था। पारथ=पृथा के पुत्र अर्जुन; अनंग=कामदेव, जिसे शिवजी ने क्रोधित हो जला दिया था।



वारिधि के कुंभ-भव, घन बन दावानल,
तरुन तिमिर हू के किरन समाज हौ।

कंस के कन्हैया, कामधेनु हू के कंट काल,
कैटभ[1] के कालिका, बिहंगम के बाज हौ ॥
भूषन भनत जम जालिम[2] के सचीपति,
पन्नग के कुल के प्रबल पच्छिराज हौ ।
रावन के राम, कार्तबीज[3] के परसुराम,
दिल्लीपति दिग्गज के सेर सिवराज हौ ॥३८॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं, यदि औरंगज़ेब समुद्र है, तो आप उसे सोख लेने वाले अगस्त्य हैं, यदि वह बड़ा भारी जंगल है, तो आप उसे भस्म कर देने वाले दावाग्नि हैं: यदि वह घोर अंधकार है, तो आप उसे नाश करने वाले सूर्य के किरण-समूह हैं, यदि वह कंस है तो आप उसके संहार-कर्ता कृष्ण हैं, यदि वह कामधेनु है, तो आप उसके लिये कण्टकाकीर्ण स्थान हैं, यदि वह कैटभासुर है, तो आप काली हैं, यदि वह पक्षी है, तो आप बाज हैं, यदि वह संसार पर अत्याचार करने वाला वृत्रासुर है, तो आप इन्द्र हैं, यदि वह सर्प है, तो आप उसे भक्षण करने वाले प्रबल गरुड़ हैं, यदि वह रावण है, तो आप राम हैं, और यदि वह सहस्त्रबाहु अर्जुन है, तो आप उसके लिये परशुराम के अवतार हैं। हे महाराज शिवाजी, दिल्लीश्वर औरंगजेब रूपी हाथी के लिये आप सिंह के समान हैं।

टिप्पणी

यहां सम अभेद रूपक अलङ्कार है—इसका लक्षण छन्द १८ में दिया गया है।

(१) एक महा बलवान राक्षस, जिसे काली ने मारा था।

(२) यम के ऐसा जुल्म करनेवाला वृत्रासुर नाम का राक्षस, जिसे इन्द्र ने दधीचि के अस्थि-निर्मित वज्र से मारा था।

(३) कार्तवीर्य, हैहय वंशी सहस्रबाहु अर्जुन का नाम है। इसने परशुराम के पिता जमदग्नि को निरपराध मार डाला था। इसीका बदला चुकाने को परशुराम ने इसे और इसके वंशवालों का इक्कीस बार संहार किया।



दरबर दौर करि नगर उजारि डारि,
कटक कटायो कोटि दुजन दरब की।
जाहरि जहान जंग जालिम है जोराबर,
चलै न कछूक अब एक राजा रब की॥
सिवराज तेरे त्रास दिल्ली भयो भुवकंप,
थर थर काँपति बिलाइति अरब की।
हालत दहिल जात काबुल कंधार बीर,
रोस करि काढ़ै समसेर ज्यों गरब की॥३९॥

भावार्थ

हे महाराज शिवा जी, आपने अपनी सेना के बल से दुष्टों के धन से एकत्रित सेना को काट डाला है, और उनके बसाये हुए शहर उजाड़ दिये हैं। आप रणभूमि में भयंकर वीरोचित प्रताप दिखानेवाले हैं। अब, संसार में आप सरीखे बलवान के आगे किसी राव राजा की नहीं चल सकती है आपके डर

के मारे दिल्ली में भूडोल सा होता रहता है और अरब की बादशाही भी थर थर कांपती रहती है। हे बीरवर, जब आप गुस्सा कर म्यान से तलवार खींचते हैं, तब काबुल और कन्धार हिल कर कांप उठते हैं।

टिप्पणी

यहां अतिशयोक्ति अलङ्कार है। जहां किसी व्यक्ति अथवा वस्तु की योग्यता उचित मात्रा में अधिक कर दी जाती है। वहां अतिशयोक्ति अलङ्कार होता है। यहां शिवा जी की वीरता से संसार भर का कांपना बतला कर अतिशयोक्ति कर दी गई है।

दरबर=दल के बल से। दुजन दरब=दुर्जनों की द्रव्य अर्थात धन। रब=राव अथवा रब अर्थात एक खुदा को मानने वाले मुसलमान।



'सिवा की बड़ाई औ हमारी लघुताई क्यों,
कहत बार बार' कहि पातसाह गरजा।
सुनिये 'खुमान हरि तुरुक गुमान महि,
देवन जेंवायो' कवि भूषन यों अरजा॥
तुम वाकों पाय कैं जरूर रन छोरो वह,
रावरे बजीर छोरि देत करि परजा।
मालुम तिहारो होत याहि में निबेरो रन,
कायर सो कायर औ सरजा सो सरजा॥४०॥

भावार्थ

औरंगज़ेब ने कविवर भूषण से पूछा कि 'तू शिवा जी की तारीफ़ और हमारी बुराई हमेशा क्यों किया करता है?" इस

पर भूषण ने निवेदन किया कि 'सुनिये, चिरंजीव शिवा जी ने मुसल्मानों का घमंड हर कर ब्राह्मणों को भोजन करा यश प्राप्त किया है। आप उसके डर के मारे रणभूमि में नहीं आते और वह आपके मंत्रियों को अपने अधीन करके छोड़ देता है। इससे यही निर्णय होता है कि कायर कायर ही है और सरजा सरजा ही है अर्थात् तुम कायर हो और शिवा जी सिंह के समान वीर है।"

टिप्पणी

खुमान=चिरंजीव। अरजा=अर्ज़ की। करि परजा=प्रजा बनाकर। निबेरो=निर्णय। सरजा=सिंह के समान वीर शिवाजी।



कोट गढ़ ढाहियतु एकै पातसाहन के,
एकै पातसाहन कै देस दाहियतु है।
भूषन भनत महाराज सिवराज एकै,
साहन की फौज पर खग्ग बाहियतु है॥
क्यों न होहिं बैरिन की बैरि बधू बौरी सुनि,
दौरनि तिहारे कहौ क्यों निबाहियतु है।
रावरे नगारे सुने बैर बारे नगरन नैन,
बारे नदन निवारे चाहियतु है॥४१॥

भावार्थ

भूषण कहते हैं, हे महाराज शिवा जी, आप किसी बाद-शाह के क़िलों को गिराते हैं, किसी के देश को जला कर भस्म

करते हैं और किसी बादशाह की सेना पर तलवार चलाते हैं। यदि शत्रुओं की स्त्रियां आप का प्रताप सुन कर पागल हो गई हैं, तो इसमें आश्चर्य ही क्या ? वह बेचारी क्या आपके आक्रमण सहन कर सकती हैं ? आपके नगाड़ों की धुंकार सुनकर शत्रुओं के नगर-निवासी ऐसे रो रहे हैं कि उनके आंसुओं की नदियाँ बड़ी बड़ी नौकाओं से ही पार की जा सकती हैं।

टिप्पणी

यहां अतिशयोक्ति और अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार हैं। अतिशयोक्ति का लक्षण छन्द १६ तथा अप्रस्तुत प्रशंसा का लक्षण छन्द ३ में दिया है।

दौरनि=धावा से। निवारं=बड़ी नावें।

'बैरिन को'—बैरि-वधू लिखना पुनरुक्ति दोष है।

छन्द ४१ और ४४ में शिवा जी की करनाटक की प्रचंड चढ़ाई का वर्णन किया गया है।

खग्ग बाहियतु है=तलवार चलाते हो।



चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठै बार बार,
दिल्ली दहसति चितै चाह करषति है।
बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर पति,
फिरति फिरंगिनि की नारी फरकति है॥
थर थर कांपत क़ुतुब साह गोलकुंडा,
हहरि हबस भूप भीर भरकति है।
राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि,
केते पातसाहन की छाती दरकति है॥४२॥

भावार्थ

महाराजा शिवाजी के नगाड़ों की गड़गड़ाहट सुनकर औरंगज़ेब आश्चर्य से चौंक चौंक उठता है। दिल्लीवाले सदा डरते ही रहते हैं। शिवाजी का कोई न कोई समाचार सुनने को सब लोग उत्सुक ही बने रहते हैं। बीजापुर का शासक उदास चेहरा किये रंज करता रहता है। अँग्रेजों की नसें डर के मारे फड़कती रहती हैं। गोलकुंडा-का राजा कुतुबशाह थर थर काँपता रहता है और अफ़रीका के हबशी राजा भयभीत होकर भागने की युक्ति सोचते रहते हैं। आप के नगाड़ों की धुंकार से कितने हो बादशाहों के कलेजे फटे जाते हैं।

टिप्पणी

यहां अतिशयोक्ति अलंकार है। इसका लक्षण छन्द ३६ में दिया है।

दहमति=डरती है। करषति=खींचती है। भरकति है=डर कर भागती है।



मौरंग कुमाऊं औ पलाऊ[1] बाँधे एक पल,
कहाँ लौं गिनाऊं जेऽब भूपन के गोत हैं।
भूषन भनत गिरि विकट निवासी लोग,
बावनी बवंजा[2] नव कोटि[3] धूंध जोत हैं॥

(१) मौरंग, कमाऊं और पलाऊ कई छोटे छोटे राज्य हैं। (२) बावनी-बवंजा से वर्तमान बरार प्रान्त का बोध होता है। (३) नवकोटी मारवाड़ प्रान्त में है।

काबुल कंधार खुरासान जेर कीन्हों जिन,
मुगल पठान सेख सैयद हा रोत हैं।
अब लग जानत हे बड़े होत पातसाह,
सिवराज प्रगटे ते राजा बड़े होत हैं ॥४३॥

भावार्थ

मौरंग, कमाऊँ और पलाऊ राज्य के राजाओं को शिवा जी ने एक क्षण ही में क़ैद कर लिया है। बहुत से राजाओं के समूह को, जिनका अलग अलग गिनाना मुश्किल है, शिवाजी ने पछाड़ दिया। घोर पहाड़ों पर रहने वालों तथा बावनी बवंजा और नवकोटी (मारवाड़) के निवासियों को निस्तेज कर दिया है। जिसने क़ाबुल, कन्धार और खुरासान को भी पराजित कर दिया और जिसके मारे मुग़ल, पठान, सेख और सैयद हाय हाय करके रो रहे हैं, उस वीरवर शिवाजी के प्रकट होने से आज समझ में आ गया कि राजा ही बड़ा होता है, बादशाह नहीं।

टिप्पणी

यहां प्रमाण अलंकार है—जहां बिलकुल सत्य कथन करने से पूरा पूरा विश्वास हो जाता है, वहां प्रमाण अलङ्कार होता है। यहां शिवाजी के प्रकट होने से प्रत्यक्ष हो गया कि राजा बादशाह से बड़ा होता है।



दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवा जी गाजी,
उग्ग पर उग्ग नाचे रुंड मुंड फरके।

भूषन भनत बाजे जीत के नगारे भारे,
सारे करनाटी भूप सिंहल को सरके ॥
मारे सुनि सुभट पनारे बारे उदभट,
तारे लगे फिरन सितारे गढ़धर के ।
बीजापुर बीरन के गोलकुंडा धीरन के,
दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दर के ॥४४॥

भावार्थ

धर्मवीर महाराज शिवजी ने क़िले पर क़िले अपने अधीन कर लिये। उनके घोर संग्रामों में शिवजी आकाश में नाचने लगे और सहस्त्रों धड़ और सिर उचकने लगे। जब विजय के बड़े बड़े नगाड़े बजाये गये, तो सारे करनाटक के राजा डरके मारे सिंहलद्वीप की ओर छिप कर भाग गये। परनालेवाले बड़े पराक्रमी योद्धाओं का मारा जाना सुन कर सितारा के महाराजा शिवाजी का भाग्य पलटने लगा। और बीजापुर, गोलकुण्डा तथा दिल्ली के शूरवीर सरदारों के हृदय अनार की भांति फटने लगे।

टिप्पणी

यहां पूर्णोपमालङ्कार है। इसका लक्षण छन्द २ में दिया है; पनारे से 'परनाले' का बोध होता है जो बीजापुर राज्य का एक प्रसिद्ध क़िला है। शिवाजी ने इस क़िले को संवत् १७३० में लिया था।

उग्ग=(उग्र)-(१) आकाश मंडल (२) शिव। गाज़ी=धर्म पर युद्ध करने वाला, धर्मवीर। दरके=फट गये।

मालवा उजैन भनि भूषन भेलास[1] ऐन,
सहर सिरोज[2] लौं परावने परत हैं।
गोंड़वानो[3] तिलँगानो[4] फिरंगानो करनाट,
रुहिलानो रुहिलन हिये हहरत हैं॥
साहि के सपूत सिवराज, तेरी धाक,
सुन गढ़पत बीर तेऊ धीर न धरत हैं।
बीजापुर गोलकुंडा आगरा दिल्ली के कोट,
बाजे बाजे रोज दरवाजे उघरत हैं॥४५॥

भावार्थ

हे शाह जी के सुपुत्र महाराज शिवाजी, आपके आतंक के मारे मालवा, उज्जैन भेलसा और शीराज शहर तक भगदड़ पड़ी है। गौंड़वाने, तैलंग तथा यूरोप में ख़लबली मच गयी है। करनाटकी और रुहेलों के हृदय भयभीत हो गये हैं। क़िले की लड़ाई लड़ने वाले बड़े बड़े बहादुर भी धीरज नहीं बांधते हैं। आपके डरसे बीजापुर आगरा तथा दिल्ली के क़िले के दरवाज़े किसी किसी दिन खोले जाते हैं, रोज़ नहीं।

टिप्पणी

(१) भेलसा गवालियर राज्यान्तर्गत है। (२) शीराज़ फ़ारिस देश में है। (३) गौंड़ों का स्थान, वर्तमान बुंदेलखण्ड। (४) तैलङ्गियों का देश। (५) फिरंगियों का देश (यूरोप)।

ऐन=(अरबी) ठीक। परावने=भगदर। हहरत हैं=भयभीत रहते हैं। कोट=क़िला। उघरत हैं=खुलते हैं।



मारि करि पातसाही खाकसाही कीन्ही जिन,
जेर कीन्हों जोर सों लै हद सब मारे की ॥
खिसि गई सेखी फिसि गई सूरताई सब,
हिसि गई हिम्मत हज़ारों लोग सारे की।
बाजत दमामें लाखौं धौंसा आगे घहरात,
गरजत मेघ ज्यों बरात चढ़े भारे की।
दूलहो सिवा जी भयो दच्छिनी दमामे वारे,
दिल्ली दुलहिन भई सहर सितारे की ॥४६॥

भावार्थ

जिन्होंने बादशाही मिटा कर भस्म कर दी, सारे राजपूताने की सीमा बल पूर्वक नष्ट कर डाली और जिन के आगे हज़ारों बड़े बड़े बहादुरों का घमंड चूर हो गया, वीरता फिस हो गई और छक्के छूट गये, उन्हीं शिवा जी के बड़े बड़े नगाड़े और लाखों डंके बज रहे हैं, मानों बादल गरज रहे हों। शिवा जी की सेना मानों किसी बड़े आदमी की बरात है। दक्षिण में विजय के डंके बजानेवाले शिवा जी उस बरात में दूलह हैं और सितारे शहर की दुलहिन दिल्ली है।

टिप्पणी

खिसि गई=गिर गई। हिसि गई=छूट गई, फ़ारसी 'शब्द' हिश्तन=छूटना। धौंसा=डंका।



डाढ़ी के रखैयन की डाढ़ी सी रहत छाती,
बाढ़ी मरजाद जैसी हद्द हिन्दुवाने की।

कढ़ि गई रैयत के मन की कसक सब,
मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की ॥
भूषन भनत दिल्ली पति दिल धकधका,
सुनि सुनि धाक सिव राज मरदाने का ।
मोटी भई चंडी बिन चोटी के चबाय सीस,
खोटी भई संपति चकत्ता के घराने की ॥४७॥

भावार्थ

दाढ़ी रखानेवालों (मुसलमान) का हृदय जलता ही रहता है। हिन्दुस्तान की मर्यादा सब तरह बढ़ रही है। हिन्दू प्रजा का सारा कष्ट दूर हो गया और सब मुसलमानों की सेखी मारी गई। वीर श्रेष्ठ शिवा जी का आतंक सुन कर औरंगज़ेब का हृदय धड़कता रहता है। मुसलमान के सिर खा कर रण-चंडी मोटी पड़ गई है और मुग़ल राज्य-वंश की लक्ष्मी दिन पर दिन क्षीण होती चली आ रही है।

टिप्पणी

यहां अनुप्रास अलंकार है। इसका लक्षण छन्द ६ में लिखा गया है।

दाढ़ी रहति=जलती रहती है। कसक=पीड़ा। बिन चोटी के=मुसलमान लोगों के।

जिन फन फुतकार उड़त पहार भार,
कूरम कठिन जनु कमल बिदलि गो।

विष जाल ज्वाल मुखी लवलीन होत,
जिन झारन चिकारि मद दिग्गज उगलि गो ॥
कीन्हों जिन पान पयपान सो जहान सब,
कोल हू उछलि जल सिन्धु खलभलि गो।
खग्ग खगराज महाराज सिवराज जू को,
अखिल भुजंग दल मुगल निगलि गो ॥४८॥

भावार्थ

जिस मुग़ल-सेना रूपी महा सर्प के फन की फुसकार से बड़े बड़े पहाड़ भी उड़ जाते थे, जिसके भार से पृथ्वी धारण करनेवाला कठोर कच्छप कमल की तरह छितर बितर हो जाता था, जिसके घोर विष रूपी अग्नि की ज्वालाओं से दिशाओं में रहनेवाले बड़े बड़े हाथी चिकार खा कर मद हीन हो जाते थे, जिसने समस्त संसार को दूध की नाईं पी लिया था, तथा जिसके प्रताप के मारे पाताल में रहने वाले बाराह के उछलने से समुद्र का पानी खौलने लगता था, उसी महा-सर्प को महाराजा शिवा जी का खड्ग-रूपी गरुड़ सहज ही निगल गया।

टिप्पणी

फुतकार=(फुत्कार) फुसकार। बिदलिगो=दलित हो गया। उगलि गो=निकाल दिया, रहित हो गया। खग्ग=खड्ग।



राखी हिन्दुवानी हिन्दुवान को तिलक राख्यो,
अस्मृति पुरान राखे बेद विधि सुनी मैं।

राखी रजपूती रजधानी राखी राजन की,
 धरा में धरम राख्यो राख्यो गुन गुनी में ॥
भूपन सुकवि जीति हद्द मरहट्टन की,
 देस देस कीरति बखानी तव सुनी मैं।
साहि के सपूत सिवराज, समसेर तेरी,
 दिल्ली दल दाबि कै दिवाल राखी दुनी मैं ॥४६॥

भावार्थ

हे शाह जी के सुपुत्र महाराज शिवा जी, आपकी तलवार ने हिन्दू-पन, उनका तिलक (चन्दन), स्मृति, पुराण तथा वैदिक धर्म की रक्षा की है; राजपूतों की रजपूती (क्षत्रियत्व), राजाओं की राजधानियां, पृथ्वी पर धर्म तथा गुणियों में गुण आपकी तलवार से ही सुरक्षित रह सके हैं। अन्य राज्यों को जीत जीत कर मरहट्टों ने जो यश कमाया है, वह सब आपका ही प्रताप है। आपकी तलवार ने ही दिल्ली की बादशाही सेना को पराजित कर संसार में मर्यादा (धर्म) स्थापित की है।

टिप्पणी

यहां पदार्थावृत्त दीपक अलंकार है। जहां शब्द तथा अर्थ दोनों बार बार दोहराये जाते हैं, वहां पदार्थावृत्त दीपक अलङ्कार होता है। यहां 'राखी' शब्द तथा उसीके अर्थ की कई बार आवृत्ति की गई है।

अस्मृति=(स्मृति) धर्म्मशास्त्र सम्बन्धी ग्रन्थ, जो मुख्यः १८ हैं। यहां छन्द-पूर्ति के लिए 'स्मृति' के आदि में 'अ' जोड़ दिया गया है। दिवाल= हद, मर्यादा, धर्म।



सारस से सूबा करवानक से साहजादे,
मोर से मुगलमीर धीर हो धचैं नहीं।
बगुला से बंगस बलूचियो बतक ऐसे,
काबुली कुलंग याते रन में रचैं नहीं॥
भूषन जू खेलत सितारे सिकार सिवा,
साहि को सुवन जाते दुवन सँचै नहीं।
बाजी सब बाज से चपेटैं चंगु चहूं ओर,
तीतर तुरुक दिल्ली भीतर बचैं नहीं॥५०॥

भावार्थ

शाहजी के पुत्र शिवाजी सितारे में शिकार खेल रहे हैं। मुसलमान सूबेदार सारस के समान हैं। शाहज़ादे गौरैया पक्षी हैं। मुग़ल अमीर मोर हैं। यह भय से धीरज नहीं धरते हैं। बंगस बगुले हैं, बलूची बतक हैं और काबुली कुलंग हैं। यह रण स्थान में नहीं आते हैं। दुष्ट लोग फिरते हुए नहीं दिखाई देते हैं। शिवा जी बाज के समान घोड़ों को चंगुल में चपेट रहे हैं। उनके मारे दिल्ली के भीतर कोई तुर्क (मुसलमान) रूपी तीतर नहीं बचने पाता।

टिप्पणी

करवानक=गौरैया पक्षी। धचैं=धरें। दुवान=दुर्जन। बाजी=घोड़े। सँचै=संचार करते, फिरते।



बेद राखे बिदित पुरान राखे सार युत,
राम नाम राख्यो अति रसना सुघर में।

हिन्दुन की चोटी रोटी राखी है सिपाहिन की,
काँधे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में ॥
मीड़ि राखे मुगल मरोरि राखे पातसाह,
बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर में ।
राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज,
देव राखे देवल स्वधर्म राख्यो घर में ॥५१॥

भावार्थ

शिवा जी ने अपनी तलवार के बल वेदों और पुराणों को लुप्त न होने दिया। सारवान राम नाम को सुन्दर जिह्वा रूपी घर में रखा। हिन्दुओं की चोटियाँ और सिपाहियों की रोटियाँ (जीविका) तथा कन्धे पर यज्ञोपवीत और गले में माला सुरक्षित रखी। मुग़लों का मर्दन और बादशाहों का गर्व खर्व कर शत्रुओं को चूर्ण कर दिया। अपने हाथ चाहे जो वरदान देने का अधिकार रखा। शिवाजी ने अपनी तलवार के बल से ही राजाओं के राज्यों की मर्यादा, मन्दिरों में देवता और घर में अपना धर्म सुरक्षित रखा।

टिप्पणी

यहां पदार्थावृत्त दीपक अलङ्कार है। इसका लक्षण छन्द ४६ में दिया है।

रसना=जिह्वा। गर=गला। तेग=तलवार। देवल=देवालय=मन्दिर।

सपत नरेस चारो ककुभ गजेस कोल,
कच्छप दिनेस धरैं धरनि अखंड को।

पापी घाले धरम सुपथ चाले मारतंड,
करतार प्रन पाले प्रानिन के चंड को ॥
भूषन भनत सदा सरजा सिवा जी गाजी,
म्लेच्छन कों मारै करि कीरति घमंड को ।
जग काज वारे निहचिंत करि डारे सब,
भोर देत आसिष तिहारे भुज दंड को ॥५२॥

भावार्थ

हे धर्म वीर शाह-पुत्र महाराज शिवाजी, आपने म्लेच्छों (मुसलमान) को मार कर कीर्त्ति और मान पाया है। पापियों का वध करके सुन्दर-मार्ग पर सूर्य को चलाया है। परमेश्वर की प्रतिज्ञा तथा प्राणियों की शक्ति का यथेष्ट पालन किया है। इस असीम उपकार के बदले सातों पर्वत, चारों दिशाओं के हाथी, पाताल का वाराह, शेष को धारण करनेवाला कच्छप, सूर्य पृथ्वी धारण करनेवाला शेष और चिंता रहित साधारण जनता सभी नित्य प्रातःकाल आपके बाहु-युग्म को आशीर्वाद देते हैं।

टिप्पणी

करतार प्रन=परमेश्वर की यह प्रतिज्ञा है कि जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब दुष्टों का दमन करने तथा सज्जनों को सुख देने के लिए वह संसार में अवतीर्ण होते हैं। शिवाजी ने परमात्मा के इस प्रण को पूरा किया।

नगेस=पहाड़। ककुभ-गजेस=दिशाओंके हाथी। कोल=बाराह, शूकर। घाले=मारे। चंड=बल। जगकाज वारे=साधारण जनता।

बाबू सूरज प्रसाद खन्ना के प्रबन्ध से हिन्दी साहित्य प्रेस प्रयाग, में छपा।